... Kumar
Asst. Prof. (Guest)
Dept. of Psychology,
S.R.A.P. College, Barachakia
(A constituent unit of B.R.A. Bihar University
Muzaffarpur)

Subject — Psychology
Topic — रोगी केन्द्रित चिकित्सा
Class — B.A. Part II (Hons) Paper IInd.
Day — Saturday.
Date — 11/02/2023
Period — 2nd

Contact No — 9801466117 / 6202315708

Q. What is client-centred therapy? Describe its merits and demerits.

प्रश्न :- रोगी केन्द्रित चिकित्सा क्या है? इसके गुण-दोषों की विवेचना करें?

उत्तर :- रोगी केन्द्रित चिकित्सा ये मानवतावादी चिकित्सा की एक महत्वपूर्ण चिकित्सा विधि है। इसकी स्थापना कार्ल रोजर्स ने सन (1951 – 1987) ने की थी। इसे निर्देशित चिकित्सा भी कहा जाता है। इसमें रोगी व्यक्ति को सहायक अवस्थापनक वातावरण प्रदान किया जाता है। जो उनकी चिकित्सा कि प्रगति तथा दिशा निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

रोजर्स का कहना है कि चिकित्सा का उद्देश्य रोगी के परिवेश से ध्यान हटकर स्वयं किया जाना चाहिए। चिकित्सक को चाहिए कि वह ऐसी परिस्थिति उत्पन्न करे कि रोगी अपनी आत्मसिद्धि प्रवृत्तियों को पुनः सक्रिय कर सके तथा अपनी इन क्षमताओं को प्राप्त कर सके। रोजर्स रोगियों को असामान्य नहीं मानते हैं। इनका मानना है कि किसी व्यक्ति को समझने के लिए उसके ज्ञान तथा भाव को समझना होगा।

रोगी केन्द्रित चिकित्सा में चिकित्सक की प्रविधियाँ उतनी महत्वपूर्ण नहीं हैं जितना कि चिकित्सा का वातावरण महत्वपूर्ण है। यह आवश्यक दृष्टिकोण से अनुकूल होना चाहिए। ऐसा अनुकूल वातावरण बनाने के लिए चिकित्सक को तीन बातों पर ध्यान देना आवश्यक है।

1. अनुरूपता — रोजर्स का सुझाव है कि चिकित्सक को रोगी के प्रति स्वाभाविक निष्कपट में अनुरूप होना चाहिए। उसे रोगी से ईमानदारी से बातें करनी चाहिए। बातचीत में अपनापन होना चाहिए ताकि वह आश्वस्त हो सके कि उसके प्रति चिकित्सक की सोच सहायता परक है।

2. बिना शर्त स्वीकारात्मक सम्मान :- चिकित्सक को चाहिए रोगी के प्रति उसका व्यवहार स्वीकारात्मक, अनुकूल एवं स्वीकारात्मक हो। उसे वह जताना चाहिए कि वह उसका शुभ चिंतक है, उसका कल्याण चाहता है। उसका तात्पर्य यह है कि चिकित्सक व रोगी को यह बात मान लेनी चाहिए।

3. परानुभूति (Empathy) रोजर्स का यह भी कहना है कि चिकित्सक के सन्दर्भ में समझना चाहिए। उसे रोगी आदि को यह बताना चाहिए कि वह उसकी समस्याओं को समझता है तथा महत्वपूर्ण समझता है।

चिकित्सकीय प्रक्रिया :- रोगी केन्द्रित चिकित्सा में चिकित्सक एक रोगी का सहयोगी के रूप में कार्य करते हैं, चिकित्सक रोगी को अनुकूल सलाह तथा निर्देश देता है वह मुख्य रूप से निम्नांकित कार्य करता है।

1. चिकित्सक द्वारा सहज तथा सहयोगी व्यवहार का प्रदर्शन।
2. रोगी को स्वयं सहायता प्रदान करना ताकि वह अपनी समस्याओं की पहचान स्वयं कर सके।
3. चिकित्सक रोगी की समस्याओं के बारे में आवश्यक स्पष्टीकरण देता है। वह मानव दर्पण का कार्य करता है।
4. चिकित्सक द्वारा रोगी को अपनी भावनाओं से अवगत कराना उद्देश्य होता है।

इस प्रकार रोगी केन्द्रित चिकित्सा के अन्तर्गत चिकित्सक का उद्देश्य रोगी के व्यक्तित्व का पुनर्निर्माण करना होता है ताकि वह स्वीकारात्मक जीवन जी सके।